मुखपृष्ठ
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यसुधा
वर्ष: 5, अंक 92,सितम्बर(प्रथम), 2020

हौसला
(द्वितीय भाग)

नीरज कुमार आज़ाद

गतांक से आगे.....

... सुन्दरी- सुबह तो भूखे पेट ही काम पर जाना होगा, काहेकि घर में खाने को एक दाना भी न हैं। गरीबराम सास अंदर भरते हुये धीमी आवाज़ में, हां सुन्दरी अब त जीने का मन ही नहीं करता है। रोते हुये गरीबराम, ए सुन्दरी तू हम पर एगो उपकार किये देओ। सुन्दरी- का जी जल्दी बोली न। गरीबराम-तू अपन फटल साड़ी के पल्लु से मेरा गला घोंट देओ, अब और गरीबी का बोझ हमरा से न सहन होगा । सुन्दरी गरीबराम के माथे पर लेटी हुई है और उसके आंख से टप-टप आंसू की बूंद गरीब के माथे पर गिर रही है और सुन्दरी कहती है- आप ऐसा न कहें ,फिर हमसब को कौन देखेगा आप ही तो हमसब की जिंदगी हैं अगर आपको कुछ हो गया त हम तो जीतेजी मर जायेंगे.....। हम तो कहैत ही कि कल से हम भी काम पर चलत है।

गरीबराम- अरे ! नहीं-नहीं अभी तक ई घर से केहू स्त्री बाहर काम पर न गईल ह, यही ई घर के परम्परा है। इस परंपरा के बंधन को तोड़ने का कलंक मेरे माथे पर न लगाओ सुन्दरी। गरीबी के कलंक को ढोते-ढोते अब थक गया हूं और ऊपर से परम्परा के कलंक मेरी सांसे निचोड़ लेगी। मैं तुम्हारे पांव पड़ता हूं ऐसा न करना, हे भगवान तु किस दुश्मनी का बदला ले रहा है। सुन्दरी तू कुछ भी न सोचना जाओ अब सो जाओ कहकर गरीब राम वही टुटी खाट पर लेट गया। लेटे-लेटे सोच रहा था विपदा की शादी हो जाये तो कुछ बोझ माथे से हल्का होगा, सोचते-सोचते कब नींद पड़ गया पता ही न चला। उधर सुन्दरी की नींद करवटें में गुजरी। सुबह सुन्दरी जागकर अपनी

फटी बिछौना को समेट कर इधर-उधर टटोल रही थी शायद कुछ चावल मिल जाये ताकि वे तो कमसेकम कुछ खा ले, उन्हें तो काम पर जाना पड़ता है, हम तो कैसे भी रह लेंगे। उधर धूप की किरणें टुटी झोपड़ी के सुराख़ से गरीब के आँखों को स्पर्श कर रही थी। थोड़ी देर बाद गरीब नींद से ऊंघते हुये बैठा जैसे ही उसकी नजर बछड़ा की तरफ गया उसे देख बछड़ा आंय-आंय-आंय करने लगा। उसे देख गरीब के आंखों से आंसू निकल पड़े मन -ही -मन सोच रहा था मेरे किस्मत के चीरहरण का कष्ट इसे भी सहना पड़ रहा है। हे भगवान! कमसेकम इसके कष्ट का तो हरण करो, तुम इतना निर्दयी क्यों हो? तभी सुन्दरी कहती है" कोई इसे ले भी लेता तो अच्छा था।" गरीब कौन लेगा इसे? सुन्दरी, क्यों न लेगा कोई? गरीब" देखती न हो चलने में इसके पैर आपस में टकराता है। शरीर के सभी हड्डी-पसली नजर आता है भला इसे क्यों लेगा कोई? क्या करेगा इसे लेकर?" कहकर अपने काम पर चल पड़ा। मालिक के घर पहुँचकर आवाज लगाते हुये चौखट के नीचे बैठ गया। अंदर से बलराम- आ गया । गरीब-जी मालिक आज के काम का है साहेब। बलराम- आज तो निचला टोपरा में हल चलाना है। गरीब-ठीक है मालिक कहकर खूंटे से दोंनो बैलों को खोलकर अपने काँधे पर हल लेकर खेत की ओर चल पड़ा। उसने दोंनो बैलों के मुंह में जुलाब बांध रखा था ताकि रास्ते में दूसरे का फसल को बर्बाद न करे।

'इतनी शक्ति हमें देना दाता मन का विश्वास कमजोर हो ना' गुनगुनाते हुये खेत पर दोंनो बैलों के साथ पहुँच गया। सुबह का समय था ठंडी-ठंडी हवा अपनी मस्ती चाल से बह रही थी।दोनों बैलों के काँधे पर पल्लों बांध बीच में हल को लगा कर अपनी कमर से खैनी निकाल ऊपरी होंटो से दबवाकर 'कौन दिशा में लेके चला रे बटोहिया ' गुनगुनाते हुये धीरे-धीरे खेत की जुताई करने लगा। अब लगभग आधा खेत जोतकर पसीना से तरबतर होकर गरीब पगडण्डी पर थोड़ा आराम करने के लिए बैठा। भूख अपनी चरम विंदु को स्पर्श कर रहा था क्योंकि उसने कल रात का खाना भी नहीं खाया था और ऊपर से सरैन्ध गर्मी। फटे पाँव उसे और कष्ट दे रहा था। अंदर-ही-अंदर रोता लेकिन उसके पास इसके अलावा और कोई दूसरा चारा भी न था। थोड़ी देर बाद बलराम का नौकर मंगरु नाश्ता लेकर खेत पर पहुंचा। मंगरु-' गरीबराम नाश्ता कर लो '। गरीब -' हां मंगरु खा लेता हूँ'।

बाल्टी से पानी निकाल हाथ - मुँह धो जल्दी-जल्दी नाश्ता का पैकेट खोलकर खाने लगा। नाश्ता में रोटी सब्जी और चटनी था। खाते-खाते घर की याद आ गयी और उसके आँखों में आंसू छलक पड़े।

मंगरु-' पास में बैठकर क्यों गरीबराम तुम्हारे आंख में आंसू क्यों भर आये?'

गरीबराम-'कुछ याद आ गया था मंगरु कहकर हाथ मुंह धो लिया। मन ही मन सोच रहा था विपदा और सुन्दरी को भूख कैसे तड़पा रहा होगा? अब हमें काम करने का मन नहीं कर रहा है। क्या करें? लेकिन करना तो पड़ेगा ही काहेकि न करेंगे तब खाने को भ तड़पते रहेंगे। फिर गाना गुनगुनाते हुये दोनों बैलों के पीठ पर डंडे से हल्का-हल्का पीटते हुये खेत की जुताई करने में लग

गया। और मंगरु, बड़की मालकिन ठीक हैं न? मंगरु-'हां गरीब राम' और छोटे मालिक का क्या हाल है मंगरु। बलराम भैया तो ठीक हैं गरीबराम वे घर ही पर है। गरीबराम -'अच्छा। बेचारे भले आदमी हैं सब का ख्याल रखते हैं।' मंगरु-' हां बलराम भैया तो हैं ही।'

उधर बलराम घर बैठे-बैठे मन ही मन सोच रहा था कि सुन्दरी का भी नसीब कितना ओछा है उसका विबाह गरीबबा के साथ हो गया। यह भगवान ने उसके साथ न्याय नहीं किया। कल्पनाओं के समुद्र में तैरते बलराम सोच रहा था सुन्दरी के घुंघराले बाल, हवा के झोंके पड़ने पर ठीक वैसी ही लगती है जैसे समुद्र में ज्वार भाटा लहराती है, उसके दोनों आंख नीले-नीले मानो किसी सुंदर झील पास में आ गयी हो, उसके नाक हिमालय की चोटी की तरह ,उसके गुलाबी-गुलाबी होंठ हाय-हाय जैसे संसार की सभी मदिरा एक ही मदिरालय में समा गयी हो । लगता है कि उसके गुलाबी होंठों को अपने होंठों से लगाकर मदिरा का एक-एक बून्द अपने जिस्म को दे दूं। उसके वक्ष स्थल को देखने मात्र से ही शरीर के सभी इन्द्रियां बेकाबू होने लगता है मानो मन वासना के समुद्र में अन्तः स्थल तक जा पहुँचा हो। उसकी चाल तो नागिन की तरह खतरनाक ओह भगवान ने क्या बनाया है उसे ।यह सोचते-सोचते उसके आंख ऐसा लग रहा था मानो मदिरालय के सारे मदिरा का सेवन कर लिया हो और कुछ ही क्षणों में निंद्रालय की आँचल में सो गया।

क्रमशः....

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें